प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु॰ सुरेखा विश्वनाथ खोत ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम॰फिल॰(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत उघु-शोध-प्रबन्ध **"आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मीराँबाई की पदावली' में मीराँबाई की भक्तिभावना"** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । कु॰ सुरेखा विश्वनाथ खोत के प्रस्तुत शोध कार्य के बारेमें में पूरी तरह संतुष्ट हूँ । संपूर्ण लघु-शोध-प्रबन्ध को आरंभ से अंत तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ ।

30/11/92

प्राचार्य शरद कम्बरकर
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर॰

दिनांक : ३०/11/1992॰

प्रस्थापन

मैंने " आ॰ परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मीराँबाई की पदावली' में मीराँबाई की भक्तिभावना " लघु-शोध-प्रबंध प्र॰ शरद कणबरकर जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम॰फिल॰ (हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है । मेरा यह मौलिक शोध-कार्य है । यह लघु-शोध-प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है ।

दिनांक : ३०:11:1992॰

वारणानगर॰

प्र॰कु॰ सुरेखा विश्वनाथ सोत

शोध-छात्रा

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ क्रमांक
	-	प्राक्कथन	1 - 6
प्रथम अध्याय	-	मीरां का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	7 - 39
द्वितीय अध्याय	-	भक्तिकालीन परिस्थितियाँ	40 - 66
तृतीय अध्याय	-	भक्ति का स्वरूप	67 - 87
चतुर्थ अध्याय	-	मीरांबाई के पदों में लक्षित भक्तिभावना का स्वरूप	87 - 170
पंचम अध्याय	-	उपसंहार	171 - 179
परिशिष्ट	-	1) संदर्भ ग्रंथ सूची 2) अन्य सहायक ग्रंथ सूची	180 - 187

प्राक्कथन

भारतीय भक्ति साहित्य में अनेक श्रेष्ठ भक्त कवियों ने अपना योगदान दिया है । पूर्व मध्यकालीन भक्ति साहित्य में तुलसीदास, सूरदास, कबीर, जायसी इन कवियों ने अपना श्रेष्ठत्व सिध्द कर दिया है । इसी पूर्व मध्यकाल में मीराँबाई को भी भक्त कवयित्री के रूप में श्रध्दा और आदरपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । मीराँबाई की कृष्णभक्ति अलौकिक है । उसकी चेतना भक्ति-भाव से पूर्ण है । उसका संपूर्ण जीवन संघर्ष और विसंगतियों से पूर्ण रहा है । मीराँ एक राजपरिवार की स्त्री होते हुए भी एक भक्त है । एक श्रेष्ठ कवयित्री की विशेषताएँ भी उसके व्यक्तित्व में दिखायी देती हैं । उसके पद भक्ति-भावों से परिपूर्ण हैं । उसके पदों में किसी पूर्व नियोजन के बिनासंगीतात्मकता और स्वाभाविकता का समावेश हो गया है ।

कुछ वर्षों के हिन्दी साहित्य के अध्ययन और अध्यापन के दौरान हिन्दी का, पूर्व मध्यकाल का भक्ति साहित्य मेरा प्रिय विषय रहा है । इन मध्ययुगीन संत और भक्त कवियों में मीराँ का प्रभाव मुझ पर अधिक रहा है । क्योंकि मीराँ के पदों में प्रेमाभक्तिपरक मधुर पदों की सृष्टि, आध्यात्मिकता, संगीतात्मकता एवं स्वाभाविकता विद्यमान है इसीसे प्रेरणा पाकर मीराँबाई की भक्तिभावना के अध्ययन की ओर मैं प्रेरित हुई हूँ ।

एम॰फिल॰ में मैंने विशेष रूप से "प्राचीन काव्य" का अध्ययन किया है इसलिए मुझे फिर अन्य प्राचीन कवियों की तरह मीराँबाई का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ । मैंने एम॰फिल॰ में "लघु-शोध-प्रबंध" का विषय "**आ॰परशुराम चतुर्वेदी**

द्वारा संपादित "मीराँबाई की पदावली" में मीराँबाई की भक्तिभावना " ऐसा चुना है । इससे मुझे फिर मीराँ के पदों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध लिखने के प्रारंभ में मेरे मन में अनेक प्रश्न उठे हैं -

1§ राजपरिवार की स्त्री होते हुए भी मीराँ में कवयित्री बननेकी इच्छा कैसे उत्पन्न हुयी ?

2§ मीराँ ने भक्ति-भावों से परिपूर्ण पद कैसे बनाए हैं ?

3§ मीराँ का प्रामाणिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व क्या है ?

4§ भक्तिकाल की परिस्थितियाँ कैसी थीं ?

5§ भारतीय साहित्य परंपरा में भक्ति का अर्थ, भक्ति की परिभाषा, भक्ति के भेद, भक्ति का विकास एवं भक्ति का स्वरूप कैसा है ?

6§ मीराँबाई की "पदावली" में भाक्तिभाावना का स्वरूप किन रूपों में अभिव्यक्त हो गया है ?

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का शीर्षक है - आ॰ परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित"मीराँबाई की पदावली" में मीराँबाई की भक्तिभावना" उपर्युक्त सभी प्रश्नों का हल ढूँढने की कोशिश मैंने इस लघु-शोध-प्रबंध में की है । मैंने चिंतन और मनन के पश्चात् इस लघु-शोध-प्रबंध के चार अध्याय बनाए हैं -

प्रथम अध्याय - मीराँ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय - भक्तिकालीन परिस्थितियाँ

तृतीय अध्याय - भक्ति का स्वरूप

चतुर्थ अध्याय - मीराँबाई के पदों में लक्षित भक्तिभावना का स्वरूप

उपसंहार -

इस प्रकार प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध चार अध्यायों में विभाजीत है ।

जीवन और काव्य का गहरा संबंध होता है । किसी भी कवि या साहित्यककी सही पहचान उसके काव्य या साहित्य से हो जाती है; किन्तु इसके लिए कवि या साहित्यिक का जीवन परिचय भी आवश्यक होता है । मीराँबाई के संपूर्ण काव्य में उसके जीवन की पूर्ण झाँकी मिलती है । इसलिए "प्रथम अध्याय" में "मीराँ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" के अंतर्गत - मीराँ की जन्मतिथि, जन्मभूमि, वंश, शिक्षा, मीराँ के माता-पिता, उसका शैशव, ससुराल, जेठ, वैधव्य, सती न होना, विष-पान, नाग-प्रसंग, दंड एवं अत्याचार, संघर्ष और साधना, संकीर्तन एवं सत्संग, गुरु, पुष्कर यात्रा, वृन्दावन निवास, उपास्य देव, चित्तोड त्याग, अजमेर गमन, गोलोकवास और मीराँ की रचनाओं का ऐतिहासिक एवं प्रामाणिक दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत किया है ।

"द्वितीय अध्याय" में मैंने भक्तिकालीन परिस्थितियों पर विचार किया है । इसमें भक्तिकाल की राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और साहित्यिक परिस्थितियों को स्पष्ट कर दिया है ।

"तृतीय अध्याय" में भक्ति का स्वरूप स्पष्ट करने के लिए भक्ति का अर्थ,

भक्ति की परिभाषा, भक्ति के भेद, साधन, भक्ति में बाधक बातें, सहायक तत्व और भक्ति के विकास का उल्लेख किया है ।

"चतुर्थ अध्याय" इस लघु-शोध-प्रबंध का प्राण है । इसमें मीराँबाई की "पदावली" में अभिव्यक्त भक्ति के विभिन्न रूपों का विवेचन प्रस्तुत किया है । इससे मीराँ की साधना, उसका आराध्य देव, भक्ति का स्वरूप और मीराँ के जीवन में भक्ति आदि बातों का उल्लेख भी हुआ है ।

"पाँचवा अध्याय" उपसंहार का है । यह समस्त लघु-शोध-प्रबंध का समापन है ।

प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है । परिशिष्ट में संदर्भ ग्रंथों एवं सहायक ग्रंथों की सूची दी गई है, साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा कर्तव्य है ।

सर्वप्रथम मैं मेरे श्रध्देय गुरुवर्य प्राचार्य शरद कणबरकर जी के प्रति नतमस्तक हूँ । क्योंकि उनके आद्योपांत निर्देशन में प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को प्रारंभ, विकास और परिसमाप्ति मिल सकी है । अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने निरंतर सस्नेह मार्गप्रदर्शन किया है । मेरे विषय की बारीकियों और कठिनाइयों को भी समझाया है । आपके पूर्ण सहयोग, प्रोत्साहन और आशीर्वाद के कारण ही मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध पूरा हो गया है ।

आपने इस लघु-शोध प्रबंध को आद्योपांत पढ़ है । एक-एक शब्द पर विचार करते हुए कष्ट साध्य परिश्रम मेरे साथ किया है । कार्य में कठोरता और व्यवहार में मृदुलता आपके गुण हैं । आपके प्रति श्रध्दा भाव से मैं यही कह सकती हूँ कि मैं हृदय से आपकी कृतज्ञ हूँ । आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्वक आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा ।

आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ॰ व्ही॰के॰ मोरे, डॉ॰ द्रविड, प्रा॰ वेदपाठक, प्रा॰ तिवले, प्रा॰ श्रीमती भागवत जी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा, मैं उनकी भी आभारी हूँ ।

अनुसंधान कार्य के लिए प्रेरित करनेवाले हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ॰ दिगे सर जी के प्रति भी मैं सविनय आभार प्रकट करती हूँ ।

विशेष रूप से मुझे इस कार्य में मेरे माता-पिता और पति का अधिक प्रोत्साहन मिला है । उनकी शुभकामनाएँ मुझे सदैव मिलती रही हैं । मेरे भाईयों ने भी मेरे इस कार्य में अधिक योगदान दिया है ।

इस लघु-शोध प्रबंध के लिए आवश्यक ग्रंथों का लाभ मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, वारणा महाविद्यालय वारणानगर और देवचंद महाविद्यालय अर्जुननगर के ग्रंथालय से हुआ । अतः ग्रंथालय के पदाधिकारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ ।

इस लघु-शोध प्रबंध के टंकन को सुचारु रूप से पूर्ण करनेवाले मे॰ अजित टाईपरायटिंग, कोल्हापूर के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ।

इस लघु-शोध प्रबंध को परिश्रम के साथ सफल और परिपूर्ण बनाने की मैंने कोशिश की है । यदि इस लघु-शोध प्रबंध से पाठक को थोडी भी खुशी होगी, तो मैं अपने विनम्र एवं क्षुद्र प्रयत्न को सफल समझूँगी ।

दिनांक : 30:11:1992.

वारणानगर.

(कु. मोत सुरेखा विश्वनाथ)

शोध-छात्रा